धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

मई 2009

बेजान वस्तुओं के प्रति
परम पूजनीय भगवान देवात्मा का व्यवहार

आत्मिक बेसुधि

एक पत्र

सत्य धर्म सबके लिए है।

स्त्री का स्थान

पूजा केवल इच्छा पूर्ति नहीं

बरसी की सभा

शुभ संग्राम

बेजान वस्तुओं के प्रति परम पूजनीय भगवान देवात्मा का व्यवहार

परम पूजनीय भगवान देवात्मा बेजान वस्तुओं के साथ भी जीवन्त सम्बन्ध अनुभव करते थे। इसीलिए उनके निवास स्थान फर्नीचर, सजावट की वस्तुएं, खिलौने निर्धारित स्थान पर तो होते ही थे, उनकी पूरी-पूरी देखभाल वा सफाई रखी जाती थी। उनको अधिक से अधिक समय तक सुरक्षित रखा जाता था। किसी भी वस्तु को अन्धेरे में भी ढूंढा जा सकता था, उनके लिए किसी वस्तु को निर्धारित स्थान पर न रखना असम्भव था।

पूजनीय भगवान के व्यक्तिगत कपड़े, उनके जूते, उनका बिस्तर आसाधारण रूप से साफ वा परिपाटी में रखे होते थे। मेज पर रखी लैंप की ओर भी शानदार ढंग से ध्यान दिया जाता था। पूजनीय भगवान के सेवादारों में बहुत सीमा तक यह भावना भर जाती थी। रसोई घर के बर्तन भी सफाई और सुन्दरता भी एक उदाहरण होते थे।

पूजनीय भगवान की घड़ी जो वर्षो पहले खरीदी गई थी, कोई विश्वास नहीं कर सकता था कि वह इतनी पुरानी है। वह इतने वर्षो के बाद भी ठीक समय देती थी। किसी प्रकार की अनियमता बेजान वस्तुओं के सम्बन्ध में भी पूजनीय भगवान की देव प्रकृति के पूर्णता विरुद्ध थी।

पूजनीय भगवान की मेज पर पैन्सले तीखी करके रखी जाती थी। वह एक सार होती थी। पूजनीय भगवान के लिए यह देख पाना ही असम्भव होता था कि किसी काम को ठीक ढंग से न किया जाए। जो भी काम हो वह पूरी निपुणता के साथ हो, पौधों, क्यारियों की देखभाल के लिए माली को पूजनीय भगवान विशेष निर्देश देते थे। वह स्वयं उनको अवश्य देखते। पौधे भी कितने सौभाग्यशाली थे जो लासानी सत्गुरु की देखरेख में पलते थे। पौधों की सफाई, उनकी ताजगी, उनकी तरतीब पूजनीय भगवान के पौधों के प्रति प्यार की मुंह बोलती तस्वीर थी। पूजनीय भगवान की यही कोशिश होती कि पौधों की ताजगी, उनकी आयु अधिक देर तक बनी रहे। यदि किसी की लापरवाही से कोई पौधा सूखने लगता तो उन्हें अथाह आघात लगता था। उसका कारण ढूंढते, उसे नष्ट होने से बचाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ते थे।

पूजनीय भगवान का मनुष्यात्माओं की भलाई में रात दिन लगे रहने के साथ अजीवित वस्तुओं के प्रति इतनी लगन, इतना ख्याल उनके चारों जगतों की भलाई के प्यार को दर्शाता है। धन्य हैं ऐसे सत्गुरु और महासौभाग्य हैं हमारे जो ऐसे आद्वतीय सत्गुरु की शरण को प्राप्त करने का सौभाग्य मिला।

धर्म जीवन

खण्ड 21 अंक 5

मई 2009

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

आत्मिक बेसुधि

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का आर्विभाव विकास क्रम की अद्‌भुत देन है। उनका रूप और क्षमता, मानव जाति से कहीं ऊपर की श्रेणी की है। उनको प्रकृत रूप में देखना और जानना सरल नहीं। उनको पहचानना और भी कठिन काम है। उनकी शरण में आकर उनके सेवक बनकर, उनके कर्मचारी वा पदधारी बनकर भी मनुष्य उनको पहचान नहीं सकते। सारी समाज में उनको पहचानने वाले दुर्लभ हैं।

उन्होंने इस विश्व में आकर नई सच्चाईयां रोशन की हैं। उनमें से कुछ सचाईयों को हम आज तक भी नहीं देखते, विशेष रूप से उनके प्रकृत देवरूप को तो बिल्कुल ही नहीं देखते।

एक सच्चाई यह है कि सुख लालसा वा नीच अनुराग सदा अन्धेरा और बेहोशी पैदा करते हैं। सुख लालसा बढ़कर मनुष्य को उच्च, सूक्ष्म और अमुल्य सोझी के विचार से सदा मूर्छित और बेसुध कर देती है।

बेहोशी वा बेसुधि क्या होती है? यह हमारी ऐसी मानसिक अवस्था है, जिसमें हमारी ज्ञान दायनी इन्द्रियां पूरा काम नहीं करती, अचेत हो जाती हैं। जैसे भोपाल की कारबाईड कंपनी को गैस लीक होने से हज़ारों व्यक्ति सोए-सोए ही खत्म हो गए। हज़ारों बुरी तरह अपंग हो गए। ज़हरीली गैस ने हज़ारों मनुष्यों को बेसुध कर दिया।

बेहोशी में हमें नज़र नहीं आता कि हम बेहोश हैं। हमारे शरीर में क्या-क्या परिवर्तन हो रहे हैं। कौन-कौन से अंग की चीरफाड़ हो रही है। कौन सा अंग निकाला जा रहा है या स्थापित किया जा रहा है?

आत्मिक बेहोशी के कारण भी हम अपने हृदय में आए परिवर्तन को देखने के अयोग्य हो जाते हैं। पाप का विष हृदय को सक्रांत और अन्धकार में धकेल देता है। अपने भीतर आ रहे परिवर्तन को मनुष्य देखने में असमर्थ हो जाता है। परिवर्तन का नियम प्रतिक्षण हम पर पूरा हो रहा है। हर समय हम परिवर्तित हो रहे हैं। हमारा कौन सा भाव बढ़ रहा है और कौन सा घट रहा है, कौन सी भली गतियां बन्द हो गई हैं, कौन सा अच्छा संग्राम घट गया है, यह नज़र आना बन्द हो जाता है।

इस सच्चाई से तो कोई होश रखने वाला सेवक वा सेविका मुन्कर नहीं हो सकता कि हम

भिन्न-भिन्न सुखों के बोधी वा प्रेमी हैं। हमारे भीतर कितने ही नीच अनुराग वर्तमान हैं। अपने सारे नीच अनुरागों को हम देख वा जान भी नहीं सकते। यदि नीच अनुराग हैं, तो उस मात्रा में हमारे भीतर अन्धेरा जरूर है। उससे बेहोशी वा बेसुधि भी ज़रूर है। परन्तु ऐसी हालत को न केवल हम देख नहीं सकते, बल्कि हम अपने आपको ठीक-ठाक होशमन्द, निर्दोष वा बेगुनाह ही देखते रहते हैं।

कौन सा सुख, कौन सा रस,
मुझे क्या कुछ बनाता है।

हम यह नहीं देख सकते। हमारे भीतर दोषपूर्ण सुख बढ़ रहे हैं, जो अपनी तृप्ति में हमें दिन रात लगाए रखते हैं। हमारे पास आत्म चिन्तन के लिए, पाठ-विचार के लिए, परोपकार के लिए कोई समय नहीं बचता। हमारा निज का साधन हफ्ते में तीन चार बार भी नहीं होता। कोई धर्म पुस्तक पढ़ने का हमारे पास समय नहीं। गुरु महाराज की छवि को रोज़ाना प्रणाम भी नहीं करते। यदि हमारी तरफ से किसी को मिथ्या वा पाप छुड़वाने के लिए लगातार कोई प्रयास नहीं होता उस काम में रस नहीं मिलता, सुख नहीं मिलता, यदि हम और सेवा के काम चाव भाव से भरकर नहीं करते, हमारा सारा समय और ही कामों में व्यतीत हो जाता है, तो निश्चय समझो, हमें पता लगे या न लगे, हम जान सकें या न जान सकें, हम आत्मिक अन्धकार वा आत्मिक बेहोशी के शिकार अवश्य हैं। इस अन्धकार में हमारी हानि हो रही है, हमें घाटा पड़ रहा है, हम आत्म नाश की तरफ जा रहे हैं, हम बहुमूल्य जीवन वृथा गंवा रहे हैं। बेशक हम कितने ही चालाक हैं, विद्वान हैं, टीचर, इंजीनियर या डाक्टर हैं, वकील वा जज हैं, व्यापारी या दुकानदार हैं, पदधारी या नेता हैं, हमारी हानि हो चुकी है, हो रही है और भी अधिक होगी।

हमारी प्रथमताएं वा महत्वताएं दूषित हैं। मुख्य और गौण की हमें होश नहीं। सोने और हीरे छोड़कर पीतल के लिए अधिक लिलायत हैं और उनके लिए अपनी सारी शक्तियां वा संग्राम लगा देते हैं।

हम सोचते रहते हैं कि हम कोई बुरा या गंदा काम तो करते नहीं। मोटे पापों वा मिथ्याओं से बचे हुए हैं। अपने सारे अवश्यक कर्त्तव्य पूरे कर रहे हैं। रोज़ी रोटी कमाते हैं। यह सभी काम जरूरी है, इनके बिना भी गुज़ारा नहीं, ऐसे विचार हम रखते हैं और इस सोच से अपने आपको निर्दोष वा सुन्दर रूप में देख-देख कर सन्तुष्ट रहते हैं।

हमारे लिए शरीर और शारीरिक सुख अधिक मुख्य हैं। आत्मा का हित चाहने के लिए धर्म की सच्ची अकांक्षा रखने वाले के लिए धीरे-धीरे अपने शरीर से अपनी आत्मा अधिक मुख्य हो जानी चाहिए, उसकी हानि हित की सोझी बहुमूल्य हो जानी चाहिए।

गुरु महाराज ने साफ-साफ फरमाया है कि "हे मनुष्य तू केवल शरीर नहीं, तू आत्मा भी है। तेरा यह शरीर एक दिन छिन्न-भिन्न हो जाएगा, तू शारीरिक सुखों की सेरी में अपनी उमर (जन्म) बर्बाद न कर।"

हमारे भीतर बड़ा दोष यह है कि हम शरीर वा शारीरिक सुखों के पुजारी हैं। शारीरिक पूजा में हमारा अधिक समय, हमारे दिन रात गुजरते हैं। हमारी शारीरिक पूजा आत्मा के हित साधन के लिए कोई समय नहीं छोड़ती। इस खुमारी में हमें आत्म हित साधन संग्राम की आवश्यकता भी अनुभव नहीं

होती।

आत्मिक हित आकांक्षी को अपनी शारीरिक सजधज, पहरावा, शिंगार और फैशन की ज़ोरदार बह रही अन्धेरी से सुरक्षित होना पड़ेगा। यदि हमारी पहनने, शिंगार करने, सजधज की इच्छा कर्मचारी वा धर्म प्रचारक बनकर भी कम नहीं होती, हमारी वस्त्रों वा पोशाकों की भूख बढ़ती जाती है, कहीं तृप्त नहीं होती। 60 - 70 वर्ष की उमर पार करके भी सादगी, स्वच्छता और सुन्दरता अच्छी नहीं लगती, तो निश्चय ही हम आत्म हित सम्बन्धी बेसुधि में हैं।

हम जितना कुछ सुख स्वादों, शारीरिक सुख आराम के लिए इकट्ठा करते हैं, खाने - पाने स्वाददार पदार्थों को ढूंडते फिरते हैं, सोने का आराम, स्नान के लिए बहुत कुछ इकट्ठा करते हैं, हमारे यह सब आकर्षण हमारे आत्म हित के लिए कोई समय नहीं रहने देते और उन पदार्थों की प्राप्ति की खुमारी दिन प्रतिदिन बढ़ती जाती है, जिससे आत्महित की जरूरत तक अनुभव नहीं होती। इन सुखों पर ब्रेक लगाने की हम सोचते तक नहीं।

शारीरिक पूजा में सैर, व्यायाम, योगा आदि भी शामिल हैं। गुरु महाराज की समाज का वातावरण मनुष्य को सेहत और उसके नियमों का भी बोधी बनाता है। कुछ साथी सैर आदि के बोधी बनकर अपनी सेहत का ख्याल रखते हैं। कुछ व्यायाम द्वारा कई रोगों से बचे रहते हैं। सेहत पर पुस्तकें लिखते वा पढ़ते भी हैं। जितना समय हम अपने शरीर को ठीक रखने वा उसके बनाव, शिंगार के लिए लगाते हैं, उससे आधा समय भी आत्मा के लिए नहीं निकालते। केवल शारीरिक सुखों की मदहोशी में समय बर्बाद करना बहुत बड़ी हानि उठाना है।

कई साथी अखबार, पुस्तकें बड़े शौक से पढ़ते हैं, परन्तु आत्म हित के लिए पाठ, अध्ययन के विचार से कोई समय नहीं निकाल सकते।

टी.वी. और फिल्में देखने का रुझान, हमारा बहुत सा समय व्यर्थ गंवा देता है और हितकर कामों के लिए समय नहीं मिलता। सारी फिल्में देखने का शौक रखने वाले, ढेरों सीरियलज़ में समय गंवाने वाले, आत्मा के सम्बन्ध में पूर्ण तौर पर सो जाते हैं। ग़फलत की गहरी नींद का शिकार होकर और ही दुनिया के वासी बन जाते हैं। धार्मिक दुनियां से और दूर हो जाते हैं। टी.वी. और फिल्मों की रुचि इतनी बढ़ रही है कि प्रत्येक जवान हो रहा बच्चा, अधखड़ उमर वाले और बूढ़े सब इसमें मस्त रहते हैं। फिल्मों का, एक्टरों के निजी जीवन का ज्ञान, हलवे की तरह स्वाद ले लेकर खाते रहते हैं, जैसे फिल्मों वा ऐक्टरों की पी. एच. डी. करनी हो। ऐसी गहरी रुचि रखने वालों के लिए धार्मिक वा आत्मिक दुनियां नहीं। जैसे शेरों और बिल्लियों को अंगूरों में रुचि नहीं होती। उसी प्रकार उक्त सुखों के लालसी को धर्म या आत्म हित या गुरु भक्ति की कोई रुचि नहीं रहती।

धन, धरती और हितकर पदार्थों का अनुराग, सफाई और सुन्दरता का अनुराग, खाने - पीने या पिलाने का इश्क, हमें आत्महित की भूख से और दूर ले जाते हैं। अंह का अधिकार बड़ा बनने वा दिखाने, बड़ा समझे जाने की भावना का हमारे दिलों पर अधिकार सदा ऐसे चक्कर में पाए रखता है कि जहां से कोई भी मार्ग आत्म सोझी की तरफ नहीं निकलता। कई बड़े घरों की स्त्रियों को कपड़े, जेवरों की प्रदर्शनी और पार्टियां करने और पार्टियों

में शामिल होने से ही फुर्सत नहीं, वह कोई और निर्माण कार्य कैसे कर सकती है। आत्मा किस जानवर का नाम है, वह कैसे समझ सकती है।

"सुबह होके होती शाम है, यूं ही होती उमर तमाम है।"

आत्मा के भले की इच्छा रखने वाले जनों को समय रहते शरीर और अहं की तृप्ति के थोथे प्रलोभनों से अपने आपको बचाना जरूरी है, नहीं तो विपरीत नतीजे से हमें कोई ताकत नहीं बचा सकती। अपने बनने और बिगड़ने की सोझी के बिना जीवन का नाश अवश्यक है।

देवात्मा फरमाते हैं :- "मैं देवत्व के ऐसे विशेष आर्विभाव वा जीवन को लेकर इसलिए आर्विभूत हुआ है, कि जो जो आत्मा, मनमुखी चाल पर चलकर और अज्ञान के अन्धेरे में फंसकर संसारिकता और पाप के विष से अपने आप का नाश कर रहे हैं, वह उससे हटकर और मेरे संग जुड़कर मृत्यु से बचें और देवत्व का श्रेष्ट वा पवित्र जीवन और उसके स्वर्गीय फल प्राप्त करें। आत्मिक अन्धकार से आत्मा पथ भ्रष्ट होकर मौत की ओर जाता है और मेरी ज्योति उस अन्धता से निकालकर सही पथ पर पाती है, और मौत से निकालकर जीवन की ओर ले जाती है।"

(बलदेव सिंह)

एक पत्र

बहुत ही हार्दिक श्रद्धा और सन्मान के योग्य श्रीमान जी,

सत्यदेव की जय,

मैं आपके श्री चरणों में सिर रखकर आपसे अपनी गल्तियों की क्षमा चाहता हूँ। जिस उपकारी ने मेरे जैसे नीच महापापी को पिशाचत्व के समुद्र में डूबते हुए को निकालने के लिए जितना घोर संग्राम किया और जितनी तड़प आपने महसूस की कोई और नहीं कर सकता। आपने कड़ाके की सर्दी में अपने वृद्ध शरीर की प्रवाह किए बिना हमारे यहां आकर हमें मरतों को बचाने के लिए लगातार संग्राम जारी रखा। हमारी कुछ तिलमात्र बेहोशी दूर हुई। आपकी मेहनत रंग लाई। लेकिन वातावरण के तूफान में इस प्रकार घिर गया कि मेरे को ऐसा लगने लगा मैं बिल्कुल ठीक हूं। मेरे को ऐसा लगता श्री मान जी की बात बिल्कुल ठीक है। पर मैं भी तो अब ठीक ही हूँ मैं अब कौन सी बुराई करता हूँ। कुछ न कुछ संग्राम भी करता ही रहता हूँ। लेकिन यह बात भूल गया कि मैं स्वेच्छचारिता में फंसता जा रहा हूँ। जिस उपकारी ने मेरे पीछे अपने सुख आराम त्यागे हैं मैं उनको केवल भूलता ही नहीं बल्कि उनका दिल भी दुखाने वाला साबित हो रहा हूँ। जब मैं रात को श्रद्धया जी के उपदेश पढ़ रहा था तो ऐसा झटका लगा कि तू महापापी है, कृतघ्न है, तूने अपने फरिश्ते उपकारी का दिल चूर-चूर किया है। इतना तड़पाया है कि जितना एक दुश्मन भी नहीं तड़पा सकता। तू पापी है, महा

बाकी पेज़ 8 पर

सत्य धर्म सबके लिए है।

भारत वर्ष के प्रचलित मत अर्थात् वेदान्त, बुद्धिज्म, जैनिज्म, रौमन कैथलक यह शिक्षा देते हैं, कि नाना सम्बन्धों से मुंह मोड़कर और ग्रहस्थाश्रम का पूर्ण त्याग करके ही एक-एक जन सन्यासी, भिक्षु, महंत और फादर बन सकता है। इसलिए उन की जिन्दगी और एक ग्रहस्थी की जिन्दगी में इतना अधिक अन्तर रखा गया है, कि साधारण मनुष्य धर्म की जिन्दगी को ग्रहस्थियों के लिए नहीं समझते। यदि कोई नौजवान परोपकार में अपना जीवन भेंट कर दे, तो उस को मूर्ख समझा जाता है, और उसे कहा जाता है, कि भाई! सन्यास बूढ़ों के लिए है, जवानों के लिए नहीं। दुनिया से किनारा किए हुए मनुष्यों के लिए है, न कि दुनिया में रहने वालों के लिए। मेरा कई जनों से वास्ता पड़ा है, और जब मैं उन से उच्च जीवन के पाने की अपील करता हूं, तो साधारणत: वह मुझे यही कहते हैं, कि संसार में ऐसी बातें चल नहीं सकती। यह बातें सन्यासियों को सजती हैं, हम को नहीं। कैसी उल्टी गंगा! सन्यासी जो सब सम्बन्धों को काट कर कर्तव्य विहीन हो चुके हैं, उन को सत्य धर्म की क्या जरूरत? सत्य धर्म तो उच्च कर्तव्यों के पालन करने की सामर्थ्य पैदा करने वाला धर्म है। कर्तव्य कर्म नाना सम्बन्धों में होते हैं। जब मनुष्य नाना सम्बन्धों में स्वार्थ को लेकर बन्ध जाता है, तब वह पाप जीवन का प्रकाश करता है, मोह बन्धनों में फंस जाता है, और अपने में ऐसी उलझने उत्पन्न कर लेता है, कि रोते चिल्लाते जीवन व्यतीत करते-करते स्थूल देह त्याग कर देता है। अब इस गुलाम को, जिस ने अपनी ही चिन्ताओं और क्रियाओं से बेड़ियां तैयार करके अपने हाथों, पांवों और गले में डाली हैं, और जिन के कारण यह बहुत दुखी होता और तड़पता है, उस गुलाम को ऐसे बन्धनों से मोक्ष देना, सत्य धर्म के कार्य का पहला अंग है। ऐसे गुलामों को मोक्ष देना संसार में नायाब है। अब ऐसे ही नाना सम्बन्धों में जुड़े हुए मनुष्य को जरूरत इस बात की है, कि वह अपने इन सब सम्बन्धों में उच्च भावों को लेकर अपना सम्बन्ध स्थापन करे। इसलिए सत्य धर्म का दूसरा अंग यह है, कि अधिकारी जनों के हृदयों में उच्च भावों को जाग्रत किया जावे। यह महान कार्य भी देवसमाज से बाहर कहीं नहीं हो रहा। दुनिया में मिथ्या मतों की भरमार है। जो इन सचाइयों से अन्धे हैं, कि सम्बन्धों में ही मनुष्य नीच बनता है, और सम्बन्धों में ही उच्च बनता है। भगवान् देवात्मा ने ही इस सचाई को देखा और प्रकाश किया है, कि प्रत्येक मनुष्य को उस सत्य धर्म की जरूरत है, जो कि मैं लाया हूं। और जो धर्म मनुष्य को नीच सुख अनुरागों और नीच घृणाओं और उन के विकारों से सत्य मोक्ष देता है और नाना सम्बन्धों में उच्च कर्तव्य बोधी बनाकर उनको उच्च और श्रेष्ठ जीवन का वारस बना देता है। एक बार जब भगवान देवात्मा के श्री चरणों में बैठा कुछ जन बैठे हुए थे, तब उन्होंने फरमाया, कि मैं जिस सत्य धर्म अथवा देव धर्म को लाया हूं, वह चपरासी से लेकर बादशाह

तक प्रत्येक जन के लिए है। एक-एक जन डाक्टर होकर, वकील होकर, सौदागर होकर, मामूली दुकानदार होकर, या बड़ा कारखानादार आदि होकर भी मेरे देव प्रभावों को पाकर वहां ही सत्य मोक्ष और उच्च जीवन का वारस हो सकता है और अपने जीवन से मेरे कार्य की महिमा प्रगट कर सकता है। ग्रहस्थाश्रम में रहना बुरा नहीं, संसार में रहना बुरा नहीं, बीवी और बच्चों वाला होने में कोई हर्ज नहीं, पैसे कमाने के लिए कोई नौकरी करना हर्ज नहीं, कोई कारोबार करना हर्ज नहीं, कोई कारखाना बनाना हर्ज नहीं आदि। हर्ज इस बात में हैं, कि मनुष्य जहां भी है, वहां किन भावों को लेकर अपनी चिन्ताएं और क्रियाएं करता है। किस चीज़ को मुख्य रखकर अपनी जीवन यात्रा करता है। वह काहे के लिए जीता है? अगर वह अपने आत्मिक हित के लिए जीता है, नाना सम्बन्धों में सेवाकारी होने में जीवन रस पाता है, तो उसका जीवन मुबारिक है, और वह दिनों दिन वहां रहकर भी अपने जीवन को उच्च बना सकता है। उच्च जीवन के लिए नीच जीवन का त्याग, उच्च लक्ष्य के लिए नीच लक्ष्णों का त्याग पर हित के लिए स्वार्थ का त्याग हर जगह ही मनुष्य को आत्मिक उन्नति के मार्ग पर ले जाएगा। यह है, सत्य धर्म जिस का प्रकाश भगवान देवात्मा ने किया है। और जो मनुष्य जगत के सब तबकों के लिए है। अर्थात् चपरासी से लेकर बादशाह तक प्रत्येक जन के लिए है।

---

6 पेज़ का बाकी

पापी है, जिस बचावन हार को सिर पर बैठाना चाहिए था। जिसको अपना चालक समझना चाहिए था उसको तड़पाया और फिर नींद आराम की सोया। लानत है ऐसे जीवन के! मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आपकी खुशी में ही अपनी खुशी महसूस करूंगा। आप चाहते है कि हम आत्म बोधी बनें, हमारा हित हो सके। श्रीमान जी मैं बार-बार अपनी गल्तियों के लिए क्षमा चाहता हूँ। आगे के लिए पूरी कोशिश करूंगा कि आपका अनादर मेरे से न हो सके। आपकी कृपा से अब मैं लगभग कुछ दिन छोड़ कर हर रोज़ गुरु महाराज की एक आध पवित्र पुस्तक पढ़कर ही सोता हूँ। श्रीमान जी अगर आपकी प्रेरणा मिलती रही तो संग्राम जारी रखूंगा।

मैं श्रीमान जंगीर सिंह जी का बहुत अभारी हूँ, बहुत ही धन्यवादी हूँ जो मेरी हर प्रकार की सहायता करने को तैयार रहते हैं। जगीर सिंह जी मेरा दिल गुरु महाराज की ओर खींचने की कोशिश करते रहते हैं। मैं आपके बताए अनुसार हररोज जगीर सिंह जी के दरवाजे के आगे झुककर शुभ भावों से प्रणाम करके सुबह गुजरता हूँ। जिससे मुझे सारा दिन खुशी अनुभव होती रहती है। काश! कि आपकी कृपा से मेरा यह शुभ साधन चलता रहे।

धन्यवाद!

एक नीच सेवक सुखदेव सिंह

स्त्री का स्थान

स्त्री और पुरुष की शारीरिक बनावट में जितना अन्तर है, उतना ही उनके कामों में भी अन्तर है। कई कामों में स्त्री का विलक्षण और विशेष योगदान है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं और दोनों का जीवन एक दूसरे के बिना अधूरा है। एक दूसरे के बिना दोनों की जिन्दगी अर्थहीन और नीरस हो जाती है। स्त्री ऐसी रचना है कि जो सुन्दरता से देखने वाले को प्रसन्न करती है और वह परिवार में सुख शान्ति बरसाने वाली है। औरत को नेचर ने मां की पदवी देकर, विशेष गुण वा स्वरूप के साथ लोंच किया है। उसे सेवा करने का वरदान दिया है। उसे यह वरदान है कि परिवार की रक्षा करनी है, इसलिए तू महान है, अपनी सेवा के इवज़ में कुछ नहीं मांगना और न कोई आशा रखनी है। अपने परिवार के लिए समर्पित होना है। तू ही परिवार की सृजक, पालक, संचालक सब कुछ है। तेरे लिए कुछ बचे या न बचे, पर तुमने अपना सब कुछ परिवार पर निछावर कर देना है। तुझे चाहे कितने कष्ट झेलने पड़ें, पर तुम्हें प्रत्येक परिवारिक जन का दुख पसीजेगा। तेरी वर्तमानता दुख दूर करने वाली होगी। तेरी छाती की प्यार भरी गर्मी लाईलाज बिमारियों को रोकने की शक्ति रखेगी।

किसी औरत के चाहे दर्जनों बच्चे हों, उसका प्यार सबके लिए एक जैसा होता है। बच्चे की चाह में औरतें अपनी जान भी दे देती है। पुराने समय में कहा जाता था कि गर्भवती औरत का तो सिरहाने कफन होता है। उस समय मैडीकल सहूलतें बहुत कम थी। औलाद की खातिर एक-एक औरत का साधु सन्तों, तांत्रिकों द्वारा आर्थिक, शारीरिक और मानसिक शोषण हुआ है। औरत पर बहुत अन्याय हुए हैं और अभी भी हो रहे हैं, उसके अन्याय को चुपचाप सहते रहने के कारण ही समाज उसके प्रति और क्रूर हो गई। ऐसी सुर्खियां पढ़ने को मिलती हैं कि 75 वर्ष की बुर्जुग माता को उसके दो पुत्रों ने नहर में फेंक दिया ताकि वह ज़मीन पर कब्ज़ा कर सकें। परन्तु वह शारीरिक रूप से तन्दरुस्त थी, उसने हाथ पैर मारे और किसी राह जाते मुसाफिर ने उसे बचा लिया। उन्होंने कहा कि चलो थाने जाकर उन पर केस दर्ज करते हैं, पर मां ने कहा नहीं, वह मेरे पुत्र हैं, उन पर कोई केस नहीं करना, चाहो तो मुझे फिर नहर में फेंक दो। धन्य हैं ऐसी माता। धन्य है उसका विशाल हृदय।

मां की ममता कभी रूखी, रसहीन नहीं होती। ममता की बारिश रहमतों के रूप में प्रत्येक बच्चों पर बरसती रहती है। और मानवी गुणों से बच्चों को सजाती रहती है। मां की ममता के बिना सुन्दर व्यक्तित्व का विकास करना कठिन काम है। अक्लमंदों का कथन है कि मोती, मेहन्दी और मां अपना नूर कुर्बान करने में ही अपनी जिन्दगी का मकसद पूरा समझते हैं। मां की गोदी का मुकाबला किसी स्वर्ग से भी नहीं किया जा सकता। मां तो सारी जिन्दगी अपनी सन्तान की भलाई के लिए अपना सब कुछ वार देने के लिए चौबीस घण्टे, आठों पहर किसी के कहने के बिना खड़ी टांग रहती है। मां के साए में पले बच्चे बुढ़ापे में भी

अपना सन्तुलन बनाए रखते हैं। परन्तु सन्तान रूपी कच्चा मेवा ज्यों-ज्यों पकने की ओर बढ़ता है त्यों-त्यों मां से दूरी बढ़ने लग जाती है, तो मां का हृदय ज़ख्मी होने लगता है। कहते हैं कि बाकी सारे कर्जे किसी न किसी रूप में वापिस किए जा सकते हैं, परन्तु मां का कर्ज ऐसा होता है, जो किसी भी रूप में वापिस नहीं किया जा सकता। पर आजकल परिवारिक विस्फोट ने माता पिता को भी अपनी लपेट में ले लिया है। ओल्ड एज होमज़ (बूढ़ों के आश्रम स्थान) में माता पिता से बच्चों के कारनामें सुनों तो आँखों में आंसू की धारा बहने के लिए मज़बूर हो जाती है। वह परिवार और परिवारिक मैंबर खुशकिस्मत हैं और बधाई के पात्र हैं, जो अपने बूढ़े माता पिता की सेवा में लगे हुए हैं।

पंजाबी ट्रिब्यून

1. कुदरत से आगे हम स्त्री के देनदान हैं, पहले ज़िंदगी देने के लिए और फिर ज़िन्दगी के योग्य बनाने के लिए। (बरेवी)
2. सब बड़े कामों की तह में स्त्री होती है। (लैमारटीन)
3. जिन्दगी में जो पवित्र और धार्मिक है, अधिकतर स्त्री ही उसकी रक्षक है। (महात्मा गांधी)
4. स्त्री कुदरत की पुत्री है, उस पर क्रोध न करो। उसका हृदय कोमल है, उस पर भरोसा रखो। (महाभारत)
5. दुनियां स्त्री की किताब है, जितना ज्ञान स्त्री प्राप्त करती है, उतना वह पढ़कर नहीं करती, जितना देख और व्यवहार से करती है। (रुसो)
6. एक सुन्दर स्त्री हीरा है, एक नेक स्त्री खज़ाना है। (शेख साईदी)
7. स्त्री की तरह मीठी वा प्रभावदायक बात और कोई नहीं कर सकता। (विक्टर हयोगो)
8. औरतें पुरुषों से अधिक समझदार होती हैं, बेशक वह पुरुषों से कम जानती हैं, पर समझती अधिक है। (जेमज़ स्टीफेनस)
9. स्त्री की सोझी आदमी से तीखी होती है, सुचेत दलीलों के बिना वह कई बार ऐसे फौरन फैसले करती है, जो पुरुष की सोच विचार से कहीं बढ़िया होते हैं। (डब्ल्यू आईक मैन)

पूजा केवल इच्छा पूर्ति नहीं

मेरे एक गुरु हैं। उन से मैं विद्यालय में कई वर्ष पढ़ा। बहुत ही शांत स्वभाव के गुस्सा कभी पास न फटका होगा। हर एक विद्यार्थी पर ध्यान दिया करते थे। विद्यालय के बाद भी घर बुलाकर निशुल्क पढ़ाया करते थे। अन्य अध्यापकों की तरह ट्यूशन का लालच उन्हें न था। गरीब विद्यार्थी की आर्थिक सहायता भी वह कर दिया करते थे। मुझे कुछ-कुछ याद है, उन के माता पिता भी उन के आज्ञाकारी होने की बहुत प्रशंसा किया करते थे। अन्याय भी न सहते थे। बलशाली भी थे। मैं आज उन्हीं की बदौलत चिकित्सक हूं जब भी मिलते बहुत ही प्यार से मिलते। मैं उन का बहुत आदर करता था, परन्तु अब उनका देहान्त हो गया है। मेरे पास उन का चित्र है, सोचता हूं, उसको बड़ा करवा कर अपने घर में लगा लूं ताकि उन की विशेषताएं मुझे याद रहें और मैं उनको अपने जीवन में अभ्यास में लाऊं तभी उन का चित्र लगाने का लाभ है वरना खाली चित्र टांगने से उन की विशेषताएं मेरे में नहीं आएंगी। इसलिए मैं अभी उन का चित्र टांगने के असमंजस में हूं।

परन्तु मैं समाज में तो कुछ और ही देखता हूं। लोगों ने अपने घरों में कुछ महान लोगों के चित्र टांग रखे हैं तथा उन की पूजा करते हैं। यहां तक तो ठीक है कि वे महान पुरुष आदरणीय तथा पूजनीय हो सकते हैं। उन का चित्र टांग कर उनकी पूजा का तभी लाभ है जब वे उन के अच्छे कर्मों का अनुसार करें। परन्तु मैं तो यह देखता हूं कि कोई भी पूजक उन का अनुसरण नहीं करता और उन की पूजा उस महान व्यक्ति के आगे कुछ मांगने, अपनी समस्याओं का समाधान करने, अपनी तरक्की, अपना प्रमोशन, गलतियों के लिए माफी, ब्याह, बीमारी के लिए प्रार्थना और आरती के रूप में उस व्यक्ति की चापलूसी बारबार माला फेर कर उस का नाम ले कर उस की प्रशंसा करना है।

जिन को हम मर्यादा पुरुषोत्तम मानते हैं, जिन की हम पूजा करते हैं, उन के बारे में धार्मिक ग्रंथों में बहुत कुछ लिखा है, जो जानना जरूरी है। आंख मूंद कर किसी को पूजना, उस का अनुसरण करना मूर्खता ही है। क्या किसी मर्यादा पुरुषोत्तम की पूजा करने से मेरी इच्छाएं (पैसा, विवाह, बीमारी, तरक्की, बेईमानी से कमाए पैसे का किसी को पता न चले) पूरी हो सकती हैं? क्या एक राजा द्वारा अपना सिंहासन छोड़कर गरीबों की सेवा करने वाले व्यक्ति की पूजा करने से मेरी इच्छाएं पूरी हो सकती हैं? क्या किसी त्यागी, जिस ने अपने कपड़े भी त्याग दिए हों, उस के आदर्शों का अनुसरण न कर के मात्र उस की पूजा करने से इच्छाएं पूरी हो सकती हैं?

क्या किसी मर्यादा पुरुषोत्तम के सेवक रहे वानर सेनाध्यक्ष की पूजा करने से मुझे कार, बंगला, एमबीबीएस, आईपीएस, आईएएस में उत्तीर्णता मिल सकती है? यही नहीं, हम ऐसी हस्तियों की भी पूजा करते हैं जिन की 108 रानियां थीं। हम यौन (लिंग) पूजक हैं। उस लिंग को देखने जम्मूकश्मीर पहुंच जाते हैं। 151 कि.ग्रा. का पारे का लिंग बनाकर पूजा जाता है।

हम ऐसे लोगों को पूजते हैं। जो भांग तथा अन्य नशा करता था। हम ऐसे लोगों की पूजा करते हैं जो किसी ऋषि का भेष बदल कर उसकी पत्नी का बलात्कार कर आता है। हम ऐसे लोगों के पूजक हैं जो स्वर्ग में अर्धनग्न लड़कियों से शराब का सेवन करते हैं। हम ऐसे लोगों की पूजा कर के उन से उन की इन आदतों को अपने में लाना चाहते हैं जो गैर कानूनी हैं।

यदि पूजा करने से मनुष्य की इच्छाएं पूरी होती हों तो मैं मास्टर जी की फोटो टांग कर पूजा आरंभ कर देता हूं, परन्तु मेरा ख्याल है कि शायद हमारी इच्छा तो वह पूरी नहीं करता। हां, उस की अवश्य करता होगा जो उन की दुकान खोलकर बैठते हैं तथा लोगों को मूर्ख बनाते हैं। उन्होंने ही ये बातें गढ़ी हैं कि इन की पूजा से इच्छा की पूर्ति होती है। हमारे बिजली, पानी, रेलवे, खाद्य पदार्थ, मौसम विभाग को भी इन की फोटो लगा कर पूजा करनी चाहिए ताकि आपूर्ति होती रहे। होना यह चाहिए था कि वैज्ञानिक और तकनीकी तरक्की के द्वारा ज्ञानविज्ञान के खुलते नए आयामों के साथ रूढ़िगत और अंधविश्वासपूर्ण कारनामों की सामाजिक भूमिका अनुपातिक रूप से समाप्त होती जाती, लेकिन इस के ठीक उल्ट यह कारनामे न केवल अपनी पूरी सघनता के साथ मौजूद हैं, बल्कि इन की सामाजिक मंजूरी अधिक बढ़ती जा रही है। एक और सदी के तथाकथित महानायक अपने बेटे-बहु के साथ मुंबई और तिरुपति के मंदिरों की खाक छानते हुए लाखों अंधभक्तों के लिए अनुकरणीय उदाहरण पेश कर रहे हैं, दूसरी ओर मंदिरों में क्षमता से दो गुनी उमडी भीड़ में सैकड़ों मर रहे रहें हैं तो हजारों को 'बिना दर्शन' मायूस होकर वापस लौटना पड़ रहा है।

तमाम खतरों और मुसीबतों के बावजूद अमरनाथ और मानसरोवर जैसी दुर्गम यात्राओं पर जाने वालों की संख्या में कोई कमी नहीं आ रही, उल्टे भीड़ बढ़ती ही जा रही है।

पापों से 'पिंड' छुड़ा कर पुण्य की गठरियां बांधने के लिए सांसद, विधायक और मुख्यमंत्री तक चमत्कारी बाबाओं के आगे नतमस्तक हैं। विरोधियों को पटकनी देने के लिए तमाम राजनीतिबाज, पूजापाठ और अनुष्टानों के जरिए अपने मनोरथ साधते हैं। मियां रुहानी और बाबा बंगाली अपने मोबाइल नंबर अखबारों में छपवा रहे हैं और हर गलीमहल्ले में थोक के भाव तैयार मंदिरमजारों के उत्साही कर्ताधर्ता, तमाम तरह के अनुष्ठानों के परचे बंटवा रहे हैं।

धर्म का इकबाल बुलंद करने में लगे अपने नाम को धन्य करने वाले ऋषिमुनि गणों के बड़े-बड़े कारपोरेट संगठन हैं, जो चिकनी पत्रिकाओं, टीवी चैनलों से ले कर इंटरनेट तक व्याप्त होकर देश विदेश में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। उन के पीछे गातीबजाती अंधी भीड़ की तादाद हजारों में नहीं, लाखों में हैं, जिस की बदौलत करोड़ों के टर्नओवर फलीभूत किए जा रहे हैं।

वास्तविकता यह है कि हम ऐसे युग में तेज उथल प्रथल के दौर से गुजर रहे हैं कि किसी चीज़ को भी उसके असल रूप में देखा जाना सम्भव नहीं हो पा रहा। अनिश्तता मानों जीवन का एक जरूरी अंग बन चुकी है। बेतहाशा बढ़ती महत्त्वाकांक्षाओं और प्रयत्नों के बीच उपजे संघर्ष को जानने वालों को धर्म का कौन सा रूप चाहिए, यह बाजार ने समझा है। इसलिए मनुष्य की इच्छाओं की पूर्ति का लालच देकर खूब धर्म को भुनाया जा रहा है।

बरसी की सभा

देव समाज के उच्च वा महान सेवक सरदार साहिब फरिश्ता तहसीलदार सरदार सावन सिंह जी की 67 वीं बरसी, उनके बच्चों और उनके आगे की फुलवाड़ी ने 22 मार्च 2009 को चण्डीगढ़ में मिलकर पूरे चाव-भाव से मनाई।

इस बार यह सभा स्वर्गवासी स. गुरु भक्त सिंह जी गिल डीआईजी पुलिस की विशाल कोठी सैक्टर-8 में रखी गई। इस सम्बन्धी कुल प्रबन्ध डीआईजी साहिब के सुयोग्य पुत्र पाली जी और उनकी सुयोग्य पत्नी ने किया। सुन्दर सोफों और कुर्सियों से हाल को सजाया गया। गुरु महाराज की छवि वा सरदार साहिब की सुन्दर फोटोज़ अलग-अलग सुन्दर ढंग से मेजों पर सजाई गई। और स्वर्गीय सम्बन्धियों की फोटोज़ भी अलग रखी गई। संगीत के लिए विशेष गायिका रोज़ी जी और राठौर साहिब की सेवा का श्रीमती हितलता जी ने पहले ही प्रबन्ध कर लिया था।

पत्रों और फोनों द्वारा बहुत सारे सम्बन्धियों को पहले ही सूचित किया गया था। सबके आने पर नाश्ते का और बाद में लंच का भी प्रबन्ध किया गया था।

परिवारिक जन समय पर 35 के करीब चण्डीगढ़, मोहाली, लुधियाना, पटियाला आदि से पहुंच गए थे। स्वर्गीय विशेष हस्तियों, सरदार गुरुभक्त सिंह जी और डाक्टर दियोल साहिब की अवर्तमानता सबको खटक रही थी।

श्रोतागण में सरदार साहिब की पांच पीढ़ियों के सौभाग्यवान जन, जिनमें बुर्जुग श्रीमती हितलता जी दियोल सब की संरक्षक के रूप में शोभयामान थी। उनकी हाज़री का एहसास सब वर्तमान जन अनुभव कर रहे थे।

सभा की कार्यवाही बहुत ही सुन्दर और मधुर भजन द्वारा 11.30 बजे शुरू की गई। जो भजन बीबी रोज़ी वा राठौर साहिब ने पेश किया। बहुत सुन्दर वातावरण बना।

इस सभा के सभापति सदा की तरह श्रीमान बलदेव सिंह जी थे। भजनों के उपरान्त पूजनीय भगवान की छवि का अर्चन किया गया, फिर फरिश्ता तहसीलदार सरदार साहिब की फोटो पर और अन्य स्वर्गीय माननीय सम्बन्धियों की फोटोज़ पर फूल वा हार चढ़ाकर अपने सम्मान का प्रदर्शन किया। यह दृष्य हृदयों को छूने वाला था।

श्रीमान बलदेव सिंह जी ने सबसे पहले इस परिवार की बहुत प्रशंसा की और सम्मान प्रगट किया जो 67 वर्षों से इस बरसी को मनाते चले आ रहे हैं, जो प्रथा इस संसार में अति दुर्लभ है।

फिर श्रीमान जी ने उपस्थित जनों को एक सीधा प्रश्न किया, परन्तु बहुत अवश्यक प्रश्न किया कि बरसी मनाने का उद्देश्य क्या है? सरदार साहिब के पोते Retd. Sq. leader और वीर चक्र प्राप्त प्रीतपाल जी गिल ने उत्तर दिया कि इस बरसी का मकसद है अपने महान और प्रतिष्टित बुर्जुग उपकारी को सच्चा सत्कार देना। यह सत्कार देकर अपने उपकारियों और महान बुर्जुगों की अच्छाई का किसी अंश अनुकरण किया जाए।

श्रीमान जी ने बताया कि वही जिन्दगी

सफल और पूर्ण है जो अपने महान बुर्ज़ुग उपकारी को सच्चा हार्दिक सन्मान दे सके और उनके पद चिन्हों पर अधिक से अधिक चल सके। रस्मी वा शिष्टाचारक सन्मान करना काफी नहीं। हमारा सत्कार हृदय से होना चाहिए, जो हमें भावपूर्ण बनाकर झुका रहा हो और उनकी महानता को हृदय में उतारने का संग्राम हो। यदि हम थोड़ा भी इन महान जीवनियों की अच्छाईयां ग्रहण कर सकेंगे, तो हमें अच्छा इन्सान बनाने में कितनी सहायता मिलेगी, इसका हम अनुमान नहीं लगा सकते।

फरिश्ता तहसीलदार साहिब की महानता के अंग बताए (1) दीन, नम्र, सन्मान वा श्रद्धा भरा हृदय (2) पूर्ण ईमानदारी सूक्ष्मता की सीमा तक (3) अपने लिए कुछ करने वालों के लिए ज़ोरदार शुक्रगुजारी (4) दूसरों के भले के लिए कुछ करने की प्रबल इच्छा। इस महानता की कुछ ठोस घटनाओं द्वारा श्रीमान ने दिलों को छूने वाले शब्दों में गुणगान किया। यह बताया गया कि यह महानता केवल और केवल परम पूजनीय भगवान के सम्पर्क में आने के कारण ही प्राप्त हुई। अब परिवार को भी अपनी वारी में उनके बताए मार्ग पर चलकर उन्हें श्रद्धांजली देनी चाहिए। इस सारे व्याख्यान का हाजरीन पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ रहा था। परिवार के पांच जनों ने बारी-बारी से अपने भावों का प्रकाश किया।

फिर श्रीमती हित लता जी दियोल ने अपने उद्‌गार प्रगट किए। उन्होंने अपने भाईयों और अपने भतीजे भतीजियों के प्यार वा सत्कार भरी सेवाओं का मुक्त कंठ से गुणगान किया। पालीजी और प्रीत जी जिस प्रकार उनके साथ जीवित सम्बन्ध महसूस करके छाया की तरह उनकी सहायता के लिए तत्पर रहते हैं, उसका भरे हृदय और सुन्दर भावों से ब्यान किया। नंदी जी और उनके पति और परिवार की सेवाओं का मुक्त कंठ से धन्यवाद किया। उनका ब्यान कृतज्ञता परिपूर्ण था।

श्री पाली जी सपुत्र श्री गुरुभक्त सिंह जी डीआईजी ने बहुत सुन्दर शब्दों में अंग्रेजी में अपनी श्रद्धांजली पेश की। माता पिता के सन्तान प्रति Concern को बहुत सुन्दर ढंग और एक सच्ची कहानी सुनाकर पेश किया। विशेषकर डॉ. दियोल साहिब के घाटे को महसूस करते हुए कहा कि मेरे पिता जी के बाद मुझे पिता जैसी सहायता वा गाईडैंस मिली, वह मुझे पिता समान ही अनुभव होते थे। उनकी Sincerity, Simplicity और सेवाकारी जिन्दगी का सुन्दर शब्दों में ब्यान किया। उनका सारा ब्यान सरदार गुरुभक्त सिंह जी की याद दिलाता था। और उनके लिए शुभ कामनाएं उठ रही थी।

फरिश्ता सरदार साहिब की एक पोती जो बिमारी वा उमर के कारण चारपाई पर ही थी उन्होंने फिरोज़पुर से अपना ब्यान लिखकर भेजा। उनका बेटा फौज में मेजर जनरल है। उन्होंने अपने बचपन की यादें ताजा की। उन्होंने सब का मन मोह लिया और सत्कार से भर दिया।

सरदार साहिब की एक और पोती ने अपने सुन्दर भावों का ब्यान किया। उन्होंने अपने तंग हालातों का ज़िकर किया, अपने माता पिता से मिली मदद, अति सुन्दर विरासत, मेहनत का धन्यवाद किया, जिससे उन्होंने कितनी अधिक उन्नति की उनका परिवार एक दूसरे की तकलीफ के समय कैसे काम आता है, उसका भी ज़िकर खुले दिन से किया।

फरिश्ता सरदार साहिब के पोते श्री टोनी

जी ने भी अच्छे बनने और सेवाकारी बनने के भाव प्रगट किए। बूढ़ साहिब में सेवारत उच्च जनों का ज़िकर किया। परिवार के साथ मिलकर कोई सेवा का स्त्रोत जारी करने की अवश्यकता का सुझाव दिया।

श्री प्रीतपाल जी ने अपनी खुशी वा सौभाग्य को महसूस करते हुए। सुन्दर भावों का ब्यान किया। उन्होंने पूछा कि सरदार साहिब की जीवनी वा फोटो किसके पास नहीं, तो कुछ लोगों ने हाथ खड़े किए। उन्होंने बताया कि यह दो चीजें सबके पास होनी चाहिए। उन्होंने 10 - 10 कापियां जल्दी ही तैयार करके रखने का वायदा किया ताकि जो चाहे वह उनसे collect कर सकता है। इस पुस्तक को खानदान की बाईबल समझकर बार - बार पढ़ते रहने की अवश्यकता है।

आखिर में माता पिता के सम्बन्ध में एक और सुन्दर भजन का गान रोज़ी जी और राठौर साहिब ने किया जो दिलों को प्रभावित कर गया। परिवार ने देव धर्म मिशन के लिए 4000 रु० दान में दिए। सबने खड़े होकर जय ध्वनि की, फिर महमानों को बहुत स्वादिष्ट भोजन खिलाया गया।

शोक समाचार

बहुत ही शोक और दुख की बात है कि हमारे प्यारे साथी सेवक श्रीमान स्वरूप लाल जी वशिष्ट का 18 अप्रैल सुबह चण्डीगढ़ पी.जी.आई में हमारी आशाओं के विपरीत देहान्त हो गया। वह 63 - 64 वर्ष के थे।

वह अपने पीछे अपनी बुर्जुगवार माता, भाई, धर्मपत्नी और दो पुत्र छोड़ गए हैं। (शोक कि पिछले वर्ष ही उनके बड़े भाई का देहान्त हुआ था।)

उनका कुछ महीने पहले स्कूटर का Accident हुआ था, काफी समय फोटिस हस्पताल में रहे और बेहतर होकर घर वापिस आ गए। वह काफी बेहतर हो गए थे, परन्तु उनके पेट में जो तकलीफ पहले थोड़ी थी, वह Accident वा दवाईयों से बहुत बढ़ गई। जब फोटिस में आराम नहीं आ रहा था तो फिर पी.जी.आई. में दाखिल करवाया गया। महीने से भी ऊपर वहां रहे, ठीक हो रहे थे, परन्तु अचानक 18 अप्रैल को वह दम तोड़ गए।

हस्पताल से सीधे उनका परिवार उन्हें उनके पैतृक गांव कालियां वाली (पिपली के निकट) ले गए और उसी शाम को उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया।

हम इस विकट घड़ी में वशिष्ट परिवार को विशेष रूप से उनकी माता, उनकी धर्म पत्नी बीबी कमलेश जी उनके सुपुत्र विक्की जी और जानी जी और उनकी पुत्रवधु शिखा जी प्रति अपनी हार्दिक हमदर्दी दुख और शोक प्रगट करते हैं और ऐसी कामना करते हैं कि देह त्यागी की आत्मा को परलोक में हर सम्भव सहायता प्राप्त हों। उनकी आत्मा को शान्ति मिले। उनको वा उनके परिवारिक जनों को धैर्य मिले।

सन्तप्त परिवार वा बच्चों के दुख में शामिल।

(बलदेव सिंह)

शुभ संग्राम

चण्डीगढ़ :– लगभग प्रत्येक रविवार यहां पर सभाएं होती रही। और साथी सेवकों के भिन्न सन्मान के योग्य श्रीमती विद्या वती जी खेड़ा भी सभाओं में अकसर पधारती रही। कुछ नये जन भी आकर शामिल होते रहे। पहली मार्च को भी रविवार की सभा की गई, एक नौजवान संगत के लिए श्रीमान जी के साथ जाने को भी तैयार हो गए।

कल्याण :– 1 मार्च सभा के बाद श्रीमान जी 12 बजे के करीब चण्डीगढ़ से कल्याण को रवाना हो गए। नौजवान लड़का भी साथ था। रात को यहां सभा की गई। सभा में बताया गया कि गुरु महाराज की शरण मनुष्य मात्र के लिए अनिवार्य है। प्रत्येक मनुष्य आत्मिक रोगी है और हानि उठा रहा है। उसको अपने आत्मिक रोगों और उनसे हानि की सोझी केवल देवात्मा के देव प्रभाव दायक मण्डल में ही मिल सकती है। यह सचाई भी बताई गई कि इस वातावरण को छोड़कर कैसे जनों ने हानि उठाई है।

पदमपुर :– 2 मार्च को श्रीमान बलदेव सिंह जी, श्रीमान बलबहादुर सिंह जी और एक और जन के साथ कल्याण से भटिण्डा पहुंचे, वहां श्रीमान हरिराम जी के पास उनके भाई श्री जगन्नाथ जी के स्वर्ग सिधारने पर शोक प्रगट किया। वह बहुत अच्छे आत्मा थे। श्रीमान जी अपने एक साथी के साथ गंगानगर को रवाना हो गए। वहां अनिल जी ने उनका स्वागत किया और उनके साथ वह पदमपुर पहुंच गए। शाम तक श्रीमान बलबहादुर सिंह जी भी यहां पहुंच गए। 2 मार्च रात से यहां सभाओं का प्रोग्राम रखा गया।

2 मार्च 8.30 बजे :– पहली सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने कराई। बताया गया कि मनुष्य पर वातावरण का इतना प्रभाव होता है, कि ऐसे वातावरण में रहकर एक-एक प्रथा जो हानिकारक और पाप मूलक होती है, उसको भी धर्म समझने के लिए मजबूर हो जाता है। गुलामी की घृणित प्रथा को कई ग्रन्थों में उच्च वा धार्मिक समझा जाता रहा है। सती जैसी अन्याय पूर्ण प्रथा को भी धर्म से जोड़ा गया। आजकल भी ऐसी रस्मों रीतियों को धर्म समझा जाता है, जो बहुत बुरी है। मनुष्य को अपने भले, बुरे का कोई ज्ञान नहीं। स्थापित धर्म मतों की आधार्मिक क्रियाओं को अचेत रूप से धर्म समझकर अपना लेता है। धर्म असल में अपने आपको वा अपने भावों को जानने का नाम है। नीच वा हानिकारक भावों से मुक्त होना है। नीच सुखों का गुलाम होने के कारण मनुष्य आत्मिक रोगी है। उसके लिए अवश्यक है कि वह परम पूजनीय भगवान देवात्मा की रोशनी में अपने असल रूप को जाने, अपने आत्मिक भावों और रोगों को जाने, उनके प्रभावों को प्राप्त करके उनसे बचे। बहुत सन्मान के योग्य श्रीमान नौध सिंह जी के जीवन के परिवर्तन की कथा द्वारा उपरोक्त सचाई को और भी सुन्दर ढंग से पेश किया।

3 मार्च सुबह 9.00 बजे :– यह सभा भी श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें बताया गया कि विश्व को जाने बिना धर्म को नहीं जाना जा सकता। विश्व इतना विशाल है कि जिसकी कोई सीमा नहीं। विश्व के चार विभाग हैं, भौतिक जगत, वनस्पति जगत, पशु जगत और मनुष्य जगत। विश्व के प्रत्येक अंश पर नियम लागू हैं। और कोई अस्तित्व नियमों से न बाहर है और न हो सकता है। नेचर में जो भी घटना होती है, वह अटल नियमों के द्वारा होती है। नेचर का प्रत्येक अस्तित्व परिवर्तित हो रहा है। यह परिवर्तन बाह्यक भी है और आन्तरिक भी है। आत्मिक परिवर्तन को समझना बहुत कठिन है। जो मनुष्य शरीर को हानि पहुंचाता है, वह धर्म का ज्ञान कैसे पा सकता है। आत्मिक नीच परिवर्तन को ही आत्मिक पतन कहते हैं। आत्मिक नीच परिवर्तन के लक्षण हैं, अन्धकार, कठोरता, उल्टी दृष्टी, अनुचित दुखों को प्राप्त होना और सबसे बढ़कर आत्मा का नाश। बड़ी सुन्दर उदाहरणों से उपरोक्त सचाई का स्पष्ट किया गया। 22 के करीब जन इस सभा में शामिल हुए।

3 – 3 – 2009, शाम 8.30 बजे :– सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। सभा में 40 के करीब जन शामिल हुए। इसमें बताया गया कि मनुष्य आरम्भ से ही कठिनाईयों में फंसा हुआ है। एक बहुत बड़ी समस्या मनुष्य की दुखों की है। बिमारी का दुख, अपने प्यारे जनों की जुदाई या मौत का दुख, कोई इच्छा पूरी न होने का दुख, धन सम्पति की हानि होने का दुख आदि कुछ उदाहरण हैं। महा पुरुषों ने कहा है कि दुनियां दुखों का घर है, परन्तु इस समस्या का हल क्या है? यह उलझन बनी रही है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने कृपा करके समझाया है कि सारे दुखों से अहित नहीं होता। कई दुख हित पैदा करते हैं। दुखों का कारण नीच सुख अनुराग हैं। इनको जानना ही दुखों से बचने का पहला ईलाज है। सत्गुरु की ज्योति के द्वारा ही नीच अनुराग को उनके प्रकृत रूप में देखा और जाना जा सकता है। उच्च सुख अनुरागों की उत्पत्ति या उच्च जीवन की उत्पत्ति ही मनुष्य को नीच दुखों से मुक्त कर सकती है। उच्च जीवन से यह समझ आ जाती है या यह समर्थ्य आ जाती है कि दुखों को सहन कैसे करना है। नीच जीवन से मुक्ति और उच्च भावों का विकास ही दुखों से मुक्ति का केवल मात्र साधन है।

4 – 3 – 2009, सुबह 9.00 बजे :– सभापति श्रीमान बलदेव सिंह थे। सभा में बताया गया कि हम जो कुछ जानते है, पर उस पर अमल नहीं करते तो बातें न जानने के बराबर ही हैं। जैसे Early to bed and early to rise, this is way to be healthy wealthy and wise, अधिकतर लोग सैर बहुत लाभदायक है, यह जानकर भी वह सैर नहीं कर सकते, ऐसे ज्ञान का कोई लाभ नहीं। कारण यह है कि मनुष्य को परिचालिक भावों का ज्ञान नहीं है, फिर मनुष्य को कौन चलाता है। परमात्मा मनुष्य को नहीं चलाता। उसका तो अस्तित्व ही काल्पनिक है। मनुष्य को उसका दिमाग भी नहीं चलाता, असल में दिमाग भी आज़ाद रूप से काम नहीं करता। ग्रह और सितारे भी मनुष्य को नहीं

चलाते। यह सत्य जानने की अवश्यकता है। मनुष्य के परिचालिक उसके भाव हैं। मनुष्य को यह जानने की अवश्यकता है कि उसको कौन से भाव चलाते हैं। आमतौर पर मनुष्य के परिचालिक नीच सुख भाव ही होते हैं। भाव का अर्थ है सुखों के लिए आकर्षण शक्ति और दुखों से विकर्षण।

4 – 3 – 2009, शाम 8.00 बजे :– यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। हाज़री लगभग 35 - 40 जनों की थी। सभापति जी ने सुबह की सभा की दुहराई की। उन नीच शक्तियों का वर्णन किया कि जिनका मनुष्य पर अधिकार रहता है। उन महा हानियों की तस्वीर खींची जो नीच शक्तियों के अधिकार में होने से होती हैं। मनुष्य के सौभाग्य खुल जाएं यदि उसके हृदय पर पूजनीय भगवान का अधिकार हो जाए। अर्थात् मनुष्य को देवात्मा की देव ज्योति में ही अपनी नीच शक्तियों से बचने और मुक्त होने के लिए व्याकुलता पैदा हो जाती है। कई काम अनुरागी पुरुष देव प्रभावों के अधिकार में आकर इस वासना के अधीन की हुई नीच गतियों का परिशोध करने के लिए मजबूर हो जाते हैं। कई अहंकार के वशीभूत होकर कई प्रकार के जुल्म की गतियां कर बैठते हैं, पर परम पूजनीय भगवान देवात्मा के अमृत को प्राप्त करके उस मजलूम से क्षमा मांग कर ही चैन प्राप्त करते हैं और अपने हृदय को शुद्ध करने के लिए महा हितकर शुभ साधनों में लीन हो जाते है। इसके विषय में सच्ची उदाहरणों के द्वारा पूजनीय भगवान के प्रभावों से आए शुभ परिवर्तन का ज़िकर किया, जो बहुत प्रभाव - दायक था।

5 – 3 – 2009, सुबह 9.00 बजे :– यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई इसमें 28 - 30 जन शामिल हुए। सभा में पूछा गया कि विद्या क्या है? इसके बाद पूछा गया कि धर्म क्या है। कई जनों ने बड़े रोचक उत्तर दिए। फिर सभापति जी ने स्वयं बताया कि धर्म हृदय की उस अवस्था का नाम है कि जिससे अपने अस्तित्व की रक्षा और विकास हो। मनुष्य जीवन का लक्ष्य भी यही है। मनुष्य की मूल इच्छा है जीते रहना और सुख से जीना। परन्तु मनुष्य सुख प्राप्त करते - करते सुख का प्रेमी और गुलाम बन जाता है। जीवन के असली मार्ग से भटक जाता है। जीवन का सही पथ क्या है, यह "मुझमें देव जीवन के विकास" में से पढ़कर सुनाया गया। दुनिया के पदार्थ, धन, मान बड़ाई, सभा, व्याख्यान, जाप, तप, कथावार्ता, तीर्थ सब और बातें हैं, धर्म प्राप्ति के लिए सब से पहले पापों से मुक्त होने की अवश्यकता है, तभी धर्म प्राप्ति के लिए उपयुक्त अवस्था बनती है। उपरोक्त चीजें धर्म में सहायक हो सकती परन्तु धर्म या उच्च भावों की प्राप्ति नहीं।

5 – 3 – 2009, रात 8.30 बजे :– इस सभा में हाज़री 40 - 45 के लगभग थी। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि मनुष्य उस चीज़ वा इन्सान की कदर नहीं कर सकता, जो उसकी हार्दिक अवस्था से ऊपर हों। मनुष्य ने उन वैज्ञानिकों का सत्कार नहीं किया, जिन्होंने नई, हितकर खोजें की। कई वैज्ञानिक मारे गए, कैद किए गए, जला दिए गए। ईसा मसीह, गुरु नानक जैसी हस्तियों को तसीहे दिए गए। विद्या की कदर अब जागी है। अब

शिक्षा के लिए नई से नई संस्थाएं खुल रही हैं। बच्चों को शिक्षा देने के लिए माता पिता अधिक से अधिक पैसे करने के लिए तैयार हैं। उसके लिए दुख, तकलीफ तंगी काट लेते हैं। परम पूजनीय भगवान देवात्मा उच्च जीवन का दान देते हैं, सम्बन्धों में उच्च मेल पैदा करके सच्चा स्वर्ग पैदा कर देते हैं, ऐसे जीवन की अभी कदर नहीं, क्योंकि मनुष्य का नैतिक स्तर अभी इतना नीचा है, उच्च जीवन की कदर करने की उसमें समर्थ्य ही नहीं है। परन्तु हमेशा ऐसा नहीं रहेगा, जैसे विद्या की कदर जागी है, आला जीवन की भी कदर जागेगी। लोग पूजनीय भगवान के दर पर उच्च जीवन की प्राप्ति के लिए बड़े ज़ोर के साथ और त्याग करके पहुंचा करेंगे। उच्च जीवन के कई उदाहरण श्रीमान बलदेव सिंह जी ने पेश किए, जो धर्म अवतार पूजनीय भगवान इस संसार में पैदा कर रहे है। माता-पिता, सन्तान, पति-पत्नी, भाई-बहन, नौकर-मालिक आदि सम्बन्धों में उच्च स्वर्गीय दृष्य पेश किए गए, जो देवात्मा पैदा कर रहे हैं।

6-3-2009, सुबह 9.00 बजे :- यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें सभापति जी ने बताया कि पाप वा बुराईयों से मुक्त हुए बिना नेक बनना असम्भव है। नेक बनने के लिए मनुष्य को काम वासना से ऊपर होना अवश्यक है। यहां तक कि मैली चिन्ताएं भी पैदा न हों। पवित्र मन किए बिना नेकी नहीं आ सकती। ईमानदार होना अगला कदम है। दूसरे की वस्तु, दूसरों के धन, दूसरों की जायदाद, दूसरों की ही नज़र आए। इससे भी आगे महान गुणों से भरपूर जन नज़र आकर उनके आगे झुकना और उनके लिए सन्मान रखना नेक बनने की ओर एक और कदम है। हृदय के सच्चे अर्थों से झुकने से वह गुण कुछ मात्रा में हमारे भीतर भी आने की सम्भावना है। एक जरनैल के कैंप में उसके पुत्र के कातिल का बेटा गल्ती से आ गया, उसने उसकी सेवा की, उसको सुरक्षित वापिस भेजा। अपने पुत्र के कातिल के बेटे के साथ ऐसा व्यवहार बहुत विशाल हृदय की निशानी है। एक और नुक्ता नेक बनने का यह है कि अपने उपकारियों के उपकारों को अनुभव करके, उनकी सेवा करते हुए तृप्त न होना और सेवा करने के मौके ढूंढते रहना कि कब उनकी सेवा का कुछ कर्ज़ उतरे। हमदर्दी के बिना किसी का दुख महसूस नहीं किया जा सकता। दूसरों के दुखों को दूर करने का हर सम्भव यत्न करना चाहिए। आत्म विशलेषण अर्थात् अपनी गल्तियों, कमियों, गुनाहों को बार-बार सामने लाकर नमृता का गुण पैदा करना नेक बनना है। परम पूजनीय भगवान के दर पर आकर अधिकारी आत्माएं नेक बनने की जबरदस्त प्रेरणाएं हासिल करती हैं।

6-3-2009, सांय 4.00 बजे :- यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने राम चन्द्र जी गेरा के घर में करवाई। इसमें उनके परिवारिक जन वा अन्य कुछ जन भी शामिल हुए। इस सभा में बताया कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने बड़े आसान ढंग से इस सचाई का दान दिया है कि भिन्न-भिन्न सम्बन्धों में उच्च गतियां करना धर्म है और नीच भावों से परिचालित अनुचित व्यवहार

करना पाप है कई सुन्दर उदाहरणों द्वारा पूजनीय भगवान की इस शिक्षा को समझाया गया। सभा के अन्त में कुछ जनों ने माता पिता को नमस्कार करने का साधन किया और हररोज़ प्रणाम करने का प्रण लिया। गेरा साहिब के परिवार ने मिठाई खिलाई गई और 200 रू० दान में मिले।

6 – 3 – 2009, रात 9.00 बजे :– यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। सभापति जी ने सुबह की सभा को दोहराया और बताया कि देवात्मा अपनी ज्योति के द्वारा अधिकारी आत्माओं को नई आंखें प्रदान करते हैं। इस देव ज्योति की यह विशेषता है कि मनुष्य बहुत समय पहले की हुई गल्तियों को भी देखने के योग्य हो जाता है। उनका परिशोध करने के भी योग्य हो जाता है। एक अध्यापिक ने कई वर्ष पहले लालच वश जो घड़ी दबाई हुई थी, वह शर्मसारी महसूस करके वापिस की और क्षमा मांगी, एक स्त्री ने ईर्षा वश अपनी देवरानी का संदूक जला दिया था। उसने इस पाप के लिए अपने ऊपर फिटकारें डाली और मशीन चला-चलाकर जो पैसे कमाए, उससे नया संदूक वा कपड़े देकर ही शान्ति प्राप्त की। देवात्मा स्वर्गीय सम्बन्ध बना देते हैं। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने कई जनों को सुबह माता पिता को प्रणाम करने के लिए प्रेरित किया। कुछ जनों ने यह प्रण भी लिया।

(बाकी फिर)

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए., (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh - 160036*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts